इकाई - 2

हरियाली की छाँव में

सूर्य किरणें
हँस हँस सजातीं
धरा की वेणी

पुष्पा मेहरा

कहानी

घर

प्रभात

कली जो खिलती नहीं आज खिली-खिली-सी थी।

गिरगिट ने उसे सड़क पार कर आते देखा तो मुसकराया, ''हैलो।''

''हैलो।'' छिपकली ने कहा।

''तुम यहाँ?'' गिरगिट का गला फूलकर पिचका।

'''तुम यहाँ' से क्या मतलब है तुम्हारा?'' छिपकली बोली।

यहाँ 'कली' कौन है और 'खिली-खिली' का मतलब क्या होगा?

''दीवार पर रहने वाली को सड़क पर देखकर, इतना तो पूछा ही जा सकता है।'' गिरगिट ने रंग बदलते हुए कहा।

''मैं आज घर बदल रही हूँ।'' छिपकली ने मुसकराते हुए कहा। ''तुम श्रीमान फरहाद को तो ज़रूर जानते होगे।''

''हाँ, हाँ पहले जब भी हम मिले हैं, तुमने उनका ज़िक्र किया है। क्या हुआ उन्हें?'' गिरगिट ने गिरगिटी आवाज़ में कहा।

''हुआ कुछ नहीं बुद्धू। वे जिस किराए के कमरे में रहते थे, अब नहीं रहते। उन्होंने अपना नया घर बना लिया है।''

छिपकली ने कहा।

''तो तुम्हें इससे क्या?'' गिरगिट गिरगिटियाया।

''मेरा जीना दूभर हो गया है और तुम कह रहे हो तुम्हें इससे क्या! तुम कभी रहे होते उनके साथ उस किराए के कमरे में तो कुछ समझ पाते। कितने सलीके से रहते थे हम। उनके पास किताबों की बड़ी-बड़ी अलमारियाँ थीं। वे किताबों के आगे रहते थे, मैं किताबों के पीछे। मैं कितनी ही बार उनसे कपड़ों की गली में मिली। बर्तनों की गली में मिली। दराज़ मार्केट में मिली। डस्टबिन में मिली। झाड़ू के नीचे मिली। हमेशा मुसकराए। मेरा तजुर्बा कहता है कि छिपकलियों के पीछे झाड़ू लेकर पड़े रहने वालों में से वो नहीं हैं।''

''होते हैं कुछ लोग।'' गिरगिट ने उबासी लेते हुए कहा।

''उनसे पहले मैं श्रीमती शांतिदास के साथ कुछ दिन रही थी। पूरी अशांतिदास थीं वे। मुझे देखते ही चिल्लाती थीं- ऊईईईई। घिग्गी बँध जाती थी उनकी। कहती थीं- "सुशांतो जल्दी आओ, इसे भगाओ।''

''मैं उनके साथ एक सप्ताह नहीं टिक सकी। पर कहते हैं ना जो वास्तव में भला होता है उसे भले लोग ज़रूर मिलते हैं। फलस्वरूप मेरी ज़िंदगी में श्रीमान फरहाद आ ही गए।'' कहते हुए छिपकली के चेहरे पर वैसी ही असीम शांति थी जैसी संगमरमर की मूर्तियों में होती है।

''ओह छिप्पू मैं तुम्हारा दर्द समझ सकता हूँ। कितनी दफ़ा मैं खुद ऐसे अनुभव से गुज़रा हूँ।'' गिरगिट ने कहा।

"ओह छिप्पू मैं तुम्हारा दर्द समझ सकता हूँ।" यहाँ दूसरों का दर्द समझने का मतलब क्या है?

''सो, अब मेरा इरादा श्रीमान फरहाद के घर में ही बचा-खुचा जीवन गुज़ारने का है।'' छिपकली ने एक ही वाक्य में बातचीत समाप्त करते हुए कहा।

''विचार अच्छा है।'' गिरगिट बोला।

''अच्छा है ना? वक्त मिले तो आना कभी।'' कहते हुए छिपकली आगे बढ़ गई।

''ज़रूर-ज़रूर मुझे तुमसे मिलने आना अच्छा ही लगेगा।'' हाथ हिलाते हुए गिरगिट छिपकली को जाते देखता रहा।

छिपकली नीम सराय के मकान नंबर 205 के गेट पर पहुँची। दीवार पर चढ़ी।

''सुनो।''

छिपकली ने चारों ओर नज़र घुमाकर देखा कि आवाज़ किधर से आई।

''अरे और ऊपर। इधर कोने में।''

छिपकली ने कोने में देखते हुए कहा, ''मैं तो सोचती थी नए घर में मैं ही सबसे पहले पहुँच रही हूँ। तुम कब पहुँची?

''मैंने कल ही शिफ्ट किया है।'' मकड़ी ने कहा।

''तो और कौन-कौन हैं यहाँ?'' छिपकली ने पूछा।

"दस-पंद्रह मक्खियाँ और सौ के आसपास मच्छर।'' मकड़ी ने बताया।

''हाय!'' छिपकली ने मक्खी-मच्छरों की ओर हाथ हिलाते हुए कहा।

''हाँ हूँ ही..ही।'' मक्खी-मच्छरों ने कुछ घबराई-सी हँसी हँसते हुए जवाब दिया। और वही मुहावरा दोहराया जो इनसानों में खासा प्रचलित है, ''हम जहाँ जाना चाहते हैं, हमारी बदकिस्मती हमसे पहले वहाँ पहुँच जाती है।''

छिपकली ने जाने कैसे सुन लिया। मच्छरों को सुनाते हुए मकड़ी से कहने लगी, ''कुछ लोग खुद तो लोगों का खून ही पिएँ और दूसरों से चाहें कि वे शाकाहारी रहें। वाह रे ज़माने!''

नए मकान की नई सफ़ेद झक दीवार में पुताई की पपड़ी में से सिर निकालते हुए काली चींटी ने कहा, ''आप लोग इतनी तेज़ आवाज़ में बात कर रहे हों कि मेरे बच्चे सोने के बजाय करवट बदल रहे हैं।''

''ओह! माफ़ करना।'' छिपकली ने मकड़ी की तरफ़ सवालिया आँखों से देखते हुए कहा।

''पता नहीं कब से रह रही है। मैं भी पहली बार ही देख रही हूँ।'' मकड़ी ने फुसफुसाते हुए कहा।

''चाय तैयार है। और मैं पड़ोसी होने के नाते पहली मुलाकात के मौके पर आप दोनों को एक साथ बुला रही हूँ।'' ततैया बोली।

मकड़ी और छिपकली को खिड़की के परदे के पीछे ततैया के यहाँ आकर अच्छा ही लगा।

''और कौन-कौन हैं यहाँ?'' छिपकली बोली।

''ज़्यादातर से तुम मिल ही चुकी हो। इनके अलावा एक तो चूहा है। लेकिन वो पूरे समय नहीं रहता है। आता-जाता रहता है। कभी-कभी एक, दो या तीन दिन के लिए गायब भी हो जाता है।''

''क्या काम करता है वह?''

''सुना है पत्रकार है।''

''तभी।''

''उसके अलावा कोई और?''

''नहीं और कोई भी नहीं है। चिड़ियाँ भी आती हैं वैसे दिन में लेकिन

शाम को चली जाती हैं। एक गिलहरी है, वो बाहर रहती है। अंदर रहने वाले केवल हम ही हैं।''

''और श्रीमान फरहाद?'' छिपकली ने ततैया और मकड़ी दोनों की ओर देखते हुए पूछा।

''क्या तुम उनकी बात कर रही हो जो शरीर पर से एक तरह के कपड़े उतार कर दूसरी तरह के कपड़े पहनते रहते हैं? पर वो तो केवल रात में रहने के लिए यहाँ आते हैं। उसमें भी ज़्यादातर समय सोए रहते हैं। थोड़ी देर के लिए जागते हैं तो किताब उठाकर पढ़ने लग जाते हैं। सच पूछो तो वे बहुत थोड़ी-सी जगह लेते हैं इस मकान में। हमारी तरह दीवारों, खिड़कियों या छत से उनका खास लेना-देना नहीं है।'' ततैया ने कहा।

''हमारी तरह दीवारों, खिड़कियों या छत से उनका खास लेना-देना नहीं है।'' यहाँ फरहाद के प्रति प्राणियों का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

''खास क्या, उनका तो कुछ भी लेना-देना नहीं है।'' मकड़ी को बहुत कम समय में ही यह बात समझ आ गई थी, इसलिए ज़ोर देकर बोली।

चाय के बाद अपने-अपने ठिकानों की ओर रुख करने से पहले मकड़ी, छिपकली और ततैया ने एक दूसरे को अपने-अपने पते बताए।

देर रात श्रीमान फरहाद आए। उन्होंने दो कमरे, किचन, और बरामदे वाले अपने नए मकान में हर जगह की लाइट

जलाई। खाना बनाकर खाया। पानी पिया। मच्छरदानी लगाई और लाइटें बुझाकर सो गए।

सोते ही उन्हें सपने आना शुरू हो जाता है। उनके सपने में चल रहा था कि बुखारी में रखी पुरानी मटकी के पास छिपकली ने अंडे दिए हैं। कमरों के पीछे गैलरी के कोने में मकड़ी ने बहुत बड़ा जाला तैयार कर लिया है जिसमें कुछ मक्खियाँ सुखाई हुई हैं। फरहाद उस जाले का फोटो क्लिक कर रहे हैं। वे बहुत खुश हैं कि नए घर में उनका परिवार बढ़ रहा है और सभी खुश हैं।

वे सपने देखते-देखते ही जाग जाते हैं। सुबह जागे। पलंग के नीचे रखी चप्पलों में पैर दिए तो उन्हें गुदगुदी हुई। उन्होंने देखा कि तीन नन्हीं मेंढ़कियाँ चप्पल पर एक दूसरे से सटी बैठी हैं। उन्होंने चप्पल को आहिस्ते-से उठाया। तीनों मेंढ़कियों को दूसरे हाथ की हथेली पर ले लिया। उनकी हथेली पर वे किसी तीन पंखुड़ियों वाले हरे फूल की तरह लग रही थीं। वे कुछ देर उन्हें हथेली पर लिए-लिए बाहर हवा में टहलने लगे। वे तब तक टहलते रहे जब तक कि वे तीनों एक-एक कर कूद न गईं।

जब वे घर में खेलने लगीं, वे आइने के सामने खड़े होकर मुसकराने लगे। तभी उन्हें आइने में छिपकली दिखी।

नए घर में उन दोनों की यह पहली मुलाकात थी।

लिखें, प्रकृति किन-किनका घर है :

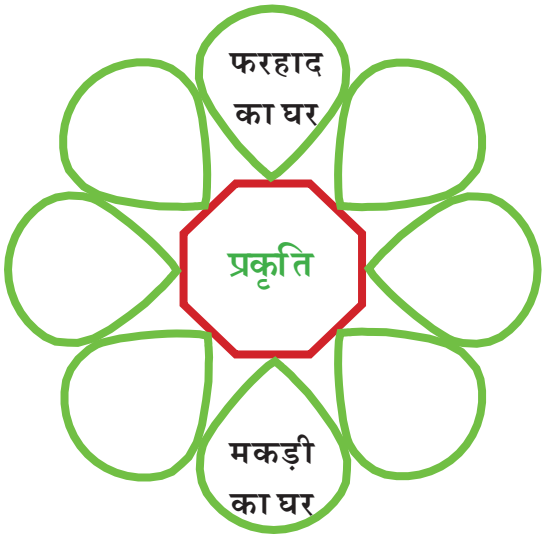

पर्यावरण से 'घर' शीर्षक का क्या संबंध है? अपना विचार लिखें :

देखें, वाक्य कैसे बनते हैं :

उन्होंने लाइट जलाई।

उन्होंने हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने अपने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने दो कमरे, किचन और बरामदे वाले अपने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

उन्होंने दो कमरे, किचन और बरामदे वाले अपने नए मकान में हर जगह की लाइट जलाई।

वाक्य को आगे बढ़ाएँ :

फरहाद टहलने निकला।

.....

.....

.....

.....

.....

रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :

- गिरगिट ने रंग बदलते हुए कहा।
- फरहाद ने चप्पल को आहिस्ते-से उठाया।
- छिपकली ने चारों ओर नज़र घुमाकर देखा।

क्रिया के साथ रेखांकित शब्दों का संबंध पहचानें। कहानी से ऐसे वाक्य चुनकर लिखें।

• ध्यान दें, ये वाक्य किनके बारे में हैं :

- ''मेरा तजुर्बा कहता है कि छिपकलियों के पीछे झाड़ू लेकर पड़े रहनेवालों में से वो नहीं हैं।''
- ''सच पूछो तो वे बहुत थोड़ी-सी जगह लेते हैं इस मकान में। हमारी तरह दीवारों, खिड़कियों या छत से उनका खास लेना-देना नहीं है।''
- वे बहुत खुश हैं कि नए घर में उनका परिवार बढ़ रहा है और सभी खुश हैं।

अब फरहाद के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

चर्चा करें :

- प्रकृति में हर प्राणी की अपनी जगह होती है। क्या आप इससे सहमत हैं? कारण बताएँ।

''प्रकृति सबका घर है।''
लघु लेख तैयार करें।

प्रभात

जन्म : 10 जुलाई 1972

प्रभात का जन्म राजस्थान में हुआ। वे कवि होने के साथ-साथ कहानीकार भी हैं। 'पानियों की गाड़ियों में', 'झूलता रहा जाता रहा' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

मदद लें...

खिली-खिली-सी - जैसे बड़ी खुशी में

छिपकली - പല്ലി, lizard, ಹಲ್ಲಿ, **பல்லி**

गिरगिट - ഓന്ത്, chameleon, ಓತಿ, **ஓணான்**

फूलना - വീർക്കുക, to puff in, ಹಿಗ್ಗಿಸುವುದು, **பெருக்குதல்**

पिचकना - ചുരുങ്ങുക, to puff out, ಕುಗ್ಗಿಸುವುದು, **சுருக்குதல்**

रंग बदलना - നിറം മാറുക, change the colour, ಬಣ್ಣಬದಲಿಸು, **நிறம் மாறுதல்**

ज़िक्र करना - उल्लेख करना

गिरगिटी आवाज़ में - ഓന്തിന്റെ ശബ്ദത്തിൽ, in the sound of chameleon ಓತಿಯ ಶಬ್ದದಲ್ಲಿ, **ஓணானின் சத்தத்தில்**

गिरगिटियाया - ഓന്ത് പറഞ്ഞു, the chameleon said, ಓತಿ ಹೇಳಿತು, **ஓணான் கூறியது**

दूभर - असह्य

सलीका - അന്തസ്സ്, dignity, ಯೋಗ್ಯತೆ/ಪಥಿಷ್ಠ, **தன்மானம்**

दराज़ मार्केट - बड़ा बाज़ार

तजुर्बा - अनुभव

उबासी लेना - കോട്ടുവായിടുക, to yawn, ಆಕಳಿಸು, **கொட்டாவிவிடுதல்**

घिग्गी बँध जाना - मुँह से आवाज़ न निकलना

टिकना - रहना

भला - अच्छा

संगमरमर - മാർബിൾ, marble, ಚಂದ್ರಕಾಂತ ಶಿಲೆ, **பளிங்கு கல்**

गुज़रना - जाना, निकलना

इरादा - निश्चय

बचा-खुचा - बाकी

वक्त - समय

चारों ओर नज़र घुमाना - चारों ओर देखना

मकड़ी - ചിലന്തി, spider, ಜೇಡ, **சிலந்தி**

दोहराना - ആവർത്തിക്കുക, to repeat, ಪುನರಾವರ್ತಿಸು, **திரும்பச்செய்தல்**

बदकिस्मती - दुर्भाग्य

शाकाहारी - സസ്യാഹാരി, vegetarian, ಸಸ್ಯಾಹಾರಿ, **சைவ உணவை உண்பவர்**

झक - चमकदार

पुताई - ലേപനം ചെയ്യപ്പെട്ട, coated, ಹೊದಿಸಿದ, **சாந்து பூசிய**

पपड़ी - ചുമരിൽ നിന്നും അടർന്നുവന്ന ഭാഗം, the part that came off the wall, ಗೋಡೆಯಿಂದ ಬೇರ್ಪಟ್ಟುಎದ್ದುಬಂದ ಸಣ್ಣಭಾಗ, **சுவரிலிருந்து அடர்ந்து வந்த பகுதி**

करवट बदलना - एक ओर से दूसरी ओर लेट जाना

सवालिया आँखों से देखा - ചോദ്യഭാവത്തിൽനോക്കി, looked questioningly, ಪ್ರಶ್ನಿಸುವ ಭಾವದಲ್ಲಿನೋಡಿತು, **வினவுவது போல் பார்த்தல்**

फुसफुसाना - धीमी आवाज़ में बोलना

मुलाकात - मिलन

मौका - अवसर

ततैया - കടന്നൽ, wasp, ಕಣಜದ ಹುಳ, குளவி

गायब होना - अप्रत्यक्ष होना

गिलहरी - അണ്ണാൻ, squirrel, ಅಳಿಲು, அணில்

लेना-देना नहीं है - कोई संबंध नहीं है

ठिकाने की ओर रुख करना - अपने वासस्थान की ओर मुड़ना

मच्छरदानी - കൊതുകുവല, mosquito net, ನುಸಿಬಲೆ, கொசுவலை

बुखारी - നെരിപ്പോട്, hearth, ಒಲೆ, அடுப்பு

मटकी - ചെറിയ മൺകുടം, small earthen pot, ಸಣ್ಣಮಣಿನ ಮಡಕೆ, சிறியமண்குடம்

जाला - मकड़ी का जाल

मक्खी - ഈച്ച, house fly, ನೊಣ, ஈ

पलंग - കട്ടിൽ, cot, ಮಂಚ, கட்டில்

गुदगुदी होना - ഇക്കിളിയാകുക, feel ticklish, ಕಚಗುಳಿ ಮಾಡು, கிச்சு கிச்சு மூட்டுதல்

मेंढ़कियाँ - തവളകൾ, frogs, ಕಪ್ಪೆಗಳು, தவளை கள்

आहिस्ते-से - धीरे-से

हथेली - കൈവെള്ള, palm, ಅಂಗೈ, உள்ளங்கை

पंखुड़ियाँ - ഇതളുകൾ, petals, ಎಸಳು(ದಳ), இதழ்

टहलना - ഉലാത്തുക, to walk, ವಾಯುಸೇವನೆಗೆ ಹೋಗು, உலாவுதல்

कविता

फूल

डॉ. रामदरश मिश्र

'जैसे बिना मौसम बहार आ गई हो' -इसपर अपना मत प्रकट करें।

'एक ही भाव से / हमेशा दहकते रहते हैं ये फूल' -कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

बाज़ार में सजा
प्लास्टिक के फूलों का उद्यान
क्या गज़ब की रंगत है
जैसे बिना मौसम बहार आ गई हो
न मिट्टी, न मिट्टी गोड़ने की समस्या
न खाद, न पानी
न चिड़ियों से रखवाली
न मौसम का इंतज़ार
एक ही भाव से
हमेशा दहकते रहते हैं ये फूल
मैं इन्हें देर तक देखता रहा–
फिर आँखों में उतरा गए चुभते हुए-से
अपने आँगन के खिलते-मुरझाते फूल

घर पहुँचते ही उन्हें उखाड़ फेंका
और दहकते हुए बाज़ार को सजा दिया
घर के पूरे अंतराल में
दिन बीते
महीने बीते
मौसम बीते
सारा घर एकरस इन रंगों में डूबा रहा

हवाओं ने कहा–
"हमें गंध चाहिए।"
मैं चुप रहा
मधुमक्खियों ने कहा–
"हमें रस चाहिए।"
मैं चुप रहा
तितलियों ने कहा–
"हमें कोमल स्पर्श चाहिए।"
मैं चुप रहा
माँ ने कहा–
"मुझे पूजा के लिए फूल चाहिए।"
मैं चुप रहा
पत्नी ने कहा–
"मुझे वेणी के लिए फूल चाहिए।"
मैं चुप रहा
लेकिन जब बच्चे ने कहा–
"बापू, मुझे फूल चाहिए
फूलों की पहचान के लिए।"
तो मैं चुप न रह सका
हृदय हाहाकार कर उठा–
"हाय, मैंने क्या कर दिया कि
बच्चे फूलों की पहचान से वंचित हो गए।"
मैंने प्लास्टिक के सारे फूल तोड़ डाले
और फावड़ा लेकर
अपने आँगन की मिट्टी से जूझने लगा
मिट्टी मुसकराई
हवा खिलखिलाई
जल कल-कल-कल-कल गाने लगा।

'सारा घर एकरस इन रंगों में डूबा रहा' -इसका मतलब क्या है?

हवा, मधुमक्खी, तितली आदि प्लास्टिक के फूलों से क्यों असंतुष्ट हैं?

बच्चा फूलों की पहचान करना चाहता है। यहाँ बच्चे का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

कविता की विशेष शैलियों को पहचानें और लिखें :

- बिना मौसम बहार आना
- .....
- .....
- .....
- .....

कविता के आधार पर पूर्ति करें :

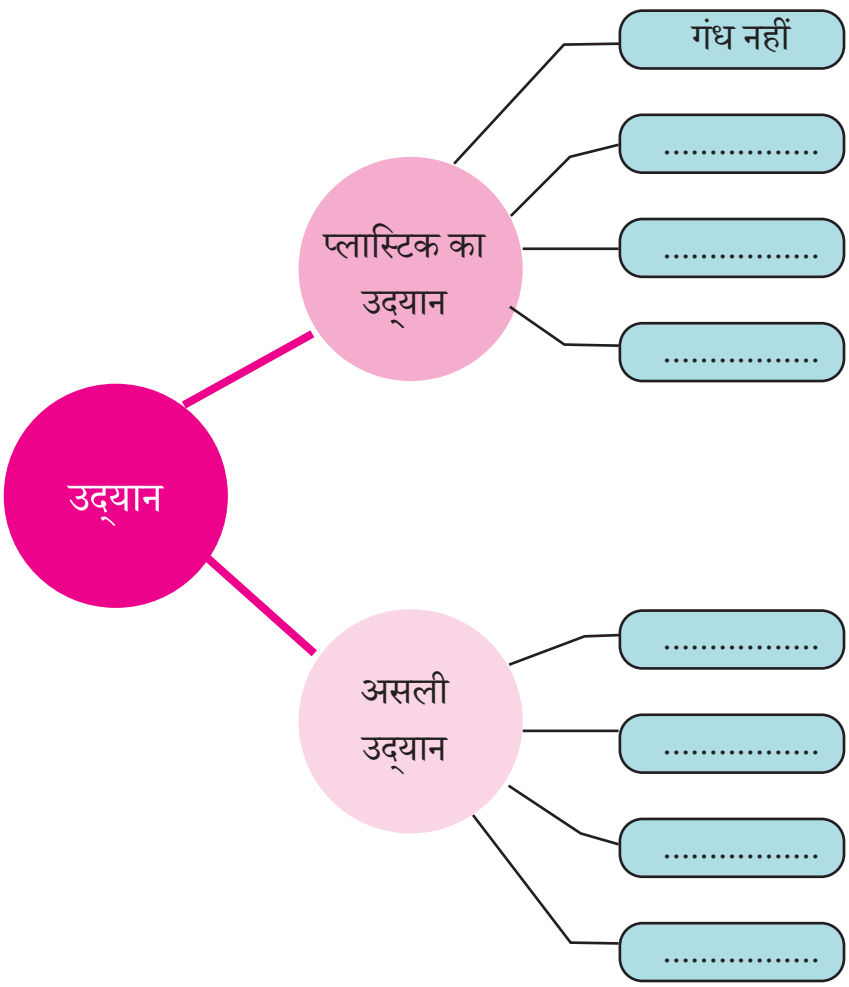

नीचे दिए वाक्य पढ़ें, रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें :

- हमें फूलों की गंध चाहिए।
- मुझे वेणी के लिए फूल चाहिए।
- हमें रस चाहिए।

ऐसे वाक्य कविता से चुनकर लिखें।

चर्चा करें, टिप्पणी लिखें :

मनुष्य अपनी सुविधा के लिए प्रकृति से अलग रहते हैं। कविता के आधार पर इसपर विचार करें और विश्लेषणात्मक टिप्पणी लिखें।

'हरियाली की छाँव में' इकाई के आधार पर सही प्रस्ताव चुनकर लिखें :

- प्रकृति का साथ देने के लिए हमें साझा कदम उठाना चाहिए।
- मनुष्य प्रकृति में अपनी इच्छा के अनुसार जी सकते हैं।
- प्लास्टिक का इस्तेमाल करते समय हमें सावधानी बरतनी चाहिए।
- खूब पेड़ लगाने से पर्यावरण की सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी।
- हमारे घर के अपशिष्टों का संस्करण सिर्फ प्रशासन का दायित्व है।
- प्रकृति में सभी जीव-जंतुओं को सहभाव से जीना चाहिए।
- प्राणियों के स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छता को बनाए रखना है।
- प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल अपनी सुख-सुविधाओं के अनुसार करना है।
- प्रकृति की अपनी एक संतुलित व्यवस्था है, जिसे बनाए रखें।

डॉ. रामदरश मिश्र

जन्म : 15 अगस्त 1924

रामदरश मिश्र हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। वे समर्थ कवि, उपन्यासकार और कहानीकार हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ। 'पक गई है धूप', 'बारिश में भीगते बच्चे', 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। व्यास सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

मदद लें...

गज़ब	-	विस्मय
रंगत	-	വർണഭംഗി, colourful, ವರ್ಣರಂಜಿತ, **வண்ணமயமான**
बहार	-	बसंत
मिट्टी गोड़ना	-	मिट्टी को नरम करना
खाद	-	उर्वरक
रखवाली	-	सुरक्षा
दहकना	-	ജ്വലിക്കുക, to blaze, ಪ್ರಜ್ವಲಿಸು, **ஒளிவிடுதல்**
चुभना	-	തുളച്ചുകയറുക, to pierce, ಭೇದಿಸಿಕೊಂಡು ಹೋಗು, **ஊடுருவியது**
उखाड़ फेंकना	-	പിഴുതെറിയുക, to root out, ಕಿತ್ತುಬಿಸಾಡು, **வேரோடு பிடுங்குதல்**
अंतराल	-	जगह
डूबा रहना	-	मग्न रहना
वेणी	-	बालों की चोटी
फावड़ा	-	कुदाल (मिट्टी खोदने का, लोहे का एक उपकरण)
जूझना	-	संघर्ष करना

इकाई मुखपृष्ठ की कवयित्री
पुष्पा मेहरा

जन्म : 10 जून 1941

पुष्पा मेहरा का जन्म उत्तर प्रदेश के मौरावाँ में हुआ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ, बाल-कविताएँ, क्षणिका, हाइकु आदि प्रकाशित हैं। 'अपना राग', 'अनछुआ आकाश', 'रेशा-रेशा' (काव्य-संग्रह), 'सागर-मन' (हाइकु काव्य-संग्रह) आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।